AMO

हज़रते अय्यूब

علیہ السلام

के वाक़िये पर तहक़ीक़

अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल के बारे में

अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल एक इस्लामी तन्ज़ीम है जो अहले सुन्नत व जमाअ़त के मन्हज पर काम कर रही है। इस तन्ज़ीम का मक़्सद क़ुरआनो सुन्नत की तालीमात को आम करना है और खिदमते खल्क़ भी इसी मक़्सद के तहत है।

सना 2014 ईस्वी में हिन्दुस्तान के शहर हज़ारीबाग से चंद लोगों ने मिल कर इस सफ़र का आगाज़ किया फिर आगे चल कर कई लोग इस में शामिल होते गये और बहुत ही क़लील मुद्दत में अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल एक तन्ज़ीम बन कर सामने आयी।

आगाज़ इस तरह हुआ कि लोगों में इल्म की कमी और आमाल से दूरी को देखते हुये हफ्ता वार इज्तिमाआत का एहतिमाम किया गया जिस में हर हफ्ते अलग-अलग घरों में महफ़िलें सजाई जाती फिर इल्मी और इस्लाही बयानात दिये जाते और उस के लिये उलमा -ए- अहले सुन्नत को मदऊ किया जाता था।

कई महीनों बल्कि एक साल से ज़ाइद ये सिलसिला जारी रहा। इस के साथ-साथ यादगार अय्याम की मुनासिबत से जलसे करवाना, मीलादुन्नबी के जुलूस का एहतिमाम करना और खल्क़ की खिदमत भी जारी रही।

इस के बाद हम ने इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के ज़रिये तेज़ी से फैल रही बुराईयों को देखा तो महसूस हुआ कि इस मैदान में भी उतरने की सख्त ज़रूरत है और फिर अपने मक़्सद के हुसूल के लिये हम ने इस तरफ रुख किया।

मुख्तलफ़ सोशल नेटवर्किंग वेबसाइटों और एप्लीकेशंस पर जब काम शुरू किया गया तो बहुत ही कम वक़्त में बढ़ती मक़बूलियत को देख कर इस का यक़ीन हो गया कि इस मैदान में काम करना कितना ज़रूरी है।

इस के लिये हम ने फेस बुक, वॉट्सएप्प, ब्लॉगर और बाद में टेलीग्राम, इंस्टाग्राम, यू-ट्यूब और वेबसाइट्स को ज़रिया बना कर लोगों तक पहुँचने की कोशिश की।

तन्ज़ीम से मुन्सलिक हर शख्स की पुर खुलूस कोशिशों ने बहुत जल्द अपना रंग दिखाया और देखते ही देखते ये नाम "अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल" हज़ारों लोगों ने जान लिया।

इस तन्ज़ीम की जानिब से :

इल्मी, तहक़ीक़ी और इस्लाही तहरीरों को आम किया जाता है ताकि लोगों के अक़ाइदो, नज़रियात और आमाल की इस्लाह हो सके,

तहक़ीक़ी मौज़ूआत पर रिसाले तरतीब दिये जाते हैं।

कुतुब व रसाइल को टेलीग्राम के ज़रिये आम किया जाता है,

तहरीरात और रसाइल को चन्द मुख्तलफ़ ज़बानों में तर्जुमा कर के आम किया जाता है ताकि ज़्यादा लोगों तक पैगाम पहुँचाया जा सके,

वॉट्सएप्प पर सैकड़ों ग्रुपों में लोगों को जोड़ कर मुख्तलफ़ मौज़ूआत पर तहरीरें वग़ैरह भेजी जाती हैं,

यू-ट्यूब पर वीडियोज़ रिकॉर्ड कर के अपलोड की जाती हैं,

इंस्टाग्राम पर तस्वीरें अपलोड की जाती हैं जो आयात, अहादीस और अक़्वाल पर मुश्तमिल होती हैं,

वेबसाइट पर इल्मी मवाद को जमा किया जाता है ताकि आसानी से लोग फाइदा उठा सकें,

इन के अलावा सुन्नियों के आपस में निकाह के लिये एक सर्विस बनाम "ई निकाह सर्विस" शुरू की गयी है जहाँ पूरे हिन्दुस्तान से निकाह के लिये सुन्नी लड़के और लड़कियों की प्रोफाइल बनायी जाती है ताकि लोग आसानी से रिश्ता तलाश कर सकें। अब तक अहले सुन्नत के लिये कोई खास ऐसी सर्विस मौजूद नहीं थी। अल्लाह की तौफ़ीक़ से हमें इस पर भी काम करने का मौक़ा मिला।

ये सफ़र जारी है और हर दिन ये कोशिश की जाती है कि इसे पहले से बेहतर बनाया जाये और बड़े से बड़े पैमाने पर काम किया जाये। इंशा अल्लाह ये कोशिशें इस तन्ज़ीम के साथ मिल कर काम करने वालों के लिये मगफ़िरत का ज़रिया होंगी और उस दिन जब लोगों के आमाल ज़ाहिर होंगे और हिसाबो किताब होगा तो ये आज का काम उस दिन के लिये आराम होगा। इंशा अल्लाह।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

हज़रत अय्यूब के वाक़िये पर तहक़ीक़

हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम अल्लाह के नबी हैं। आप हज़रत इस्हाक़ अ़लैहिस्सलाम की औलाद में से हैं। अल्लाह तआला ने आप को कसरते माल और औलाद से नवाज़ा था। आप पर एक वक़्त ऐसा आया कि अल्लाह पाक ने आप को आज़माइश में डाला और आप की औलाद और माल वग़ैरह आप से दूर हो गये।

अल्लाह की राह में उसके नेक बंदो की आज़माइश होती है और चूँकि अंबिया -ए- किराम ज़्यादा महबूब होते हैं तो उन की आज़माइश आम लोगों के मुक़ाबिल बड़ी होती हैं और फिर उनके दरजात को बे-हिसाब बुलंदी अ़ता की जाती है।

हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम के सब्र की मिसाल दी जाती है। सब्रे अय्यूब का वाक़िया बहुत मशहूर है। अक्सर मुसलमानों को ना सिर्फ ये मालूम है बल्कि वो अपने मुश्किल वक़्त में इसे याद कर के इस से मदद भी लेते है। इस वाक़िये से मुतल्लिक़ कई बातें ऐसी मशहूर हो गई हैं जो दुरुस्त नहीं है। दुरुस्त ना होने के साथ ये बाते अंबिया -ए- किराम की शान के ख़िलाफ़ भी है। वो बातें कुछ इस तरह हैं कि आप के जिस्म में कीड़े पड़ गये थे जिस की वजह से लोग आप से दूर होने लगे और आप को गाँव से बाहर निकाल दिया गया।

एक क़व्वाल ने ये तक कहा कि लोगों ने आप को वहाँ फेंक दिया जहाँ कूड़ा फेंका जाता है।

ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم

हम ने इस वाक़िये के बारे में बाज़ उलमा-ए- अहले सुन्नत की तहक़ीक़ को जमा किया है ताकि इन बे-अस्ल बातों का रद्द हो सके और साथ में अस्ल वाक़िये से लोगो को रोशनास कराया जाये।

इस का जानना बहुत ज़रूरी है वरना अंबिया -ए- किराम की तरफ ऐसी बातें मंसूब करना एक मुसलमान के लिए उस के ईमान पर असर अंदाज़ हो सकता है।

खलीफा ए हुजूर मुफ्ती -ए- आज़मे हिन्द, शारेह बुखारी, अ़ल्लामा मुफ्ती शरीफुल हक़ अमजदी रहीमहुल्लाहु तआला लिखते हैं कि ये सहीह है और क़ुरआन से साबित है कि हज़रते अय्यूब अ़लैहिस्सलाम को बतौरे आज़माइश बीमारी मे मुब्तिला किया गया और वो बीमारी क्या थी तो बहुत से मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि आप के जिस्म पर फोड़े निकल आये थे जिस में कीड़े पड़ गये थे।

जिस सवाल के जवाब में आपने ये तहरीर फ़रमाया है उस में साईल ने एक रिवायत का ज़िक्र किया था जो कुछ इस तरह बयान की जाती है कि हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम के जिस्म से एक कीड़ा पानी में गिरा और वो झींगा मछली बन गया।

आप लिखते हैं कि ये रिवायत मेरी नज़र से नहीं गुजरी और जिसने बयान की है उस पर लाज़िम है कि हवाला पेश करे और अगर वो खुद घढ़ कर बयान करता है तो उस पर तौबा फ़र्ज़ है (फिर आप लिखते हैं कि) ये भी हक़ है कि अम्बिया -ए- किराम ऐसी बीमारी से मुनज़्ज़ा हैं जिस से घिन आये।

(فتاوی شارح بخاری، ج1، ص512)

एक और सवाल किया गया जिस में जिस्म पर कीड़े पड़ जाने की बात थी तो आप लिखते हैं कि ये वाक़िया तफ़सीर की कुतुब में मौजूद है और ये बतौरे आज़माइश था लिहाज़ा इस पर कोई ऐतराज़ नहीं।

(ایضاً، 553)

हज़रत मुफ़्ती वकारुद्दीन क़ादरी रहिमहुल्लाहू त'आला लिखते है कि :

हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के जिस्म पर ऐसे कीड़े पड़ना मंक़ूल तो है पर तमाम मुफ़स्सिरीन ने इसे नक़ल नहीं किया है

बाज़ तफसीरों में ऐसे वाकियात को लिख कर इनकी सिहहत (यानी सहीह होने) के बारे में ये लिख दिया गया है कि अल्लाह त'आला बेहतर जानता है जिससे मालूम होता है कि इन्हें भी वाकिये के बारे में शुबहा (Doubt) था।

अल्लाह त'आला अम्बिया -ए- किराम को किसी ऐसे मर्ज़ में मुब्तिला नहीं फरमाता जिससे लोगों को नफरत हो लिहाज़ा जब तक किसी सहीह हदीस से ये वाकिया साबित ना हो, तब तक इसे बयान करना ठीक नहीं है।

(انظر: وقار الفتاوی، ج1، ص70)

यहां सवाल करने वाले ने चंद वाकियात का ज़िक्र किया था मसलन कीड़े पड़ जाना फिर लोगों का आपको इलाके से बाहर निकाल देना और फिर ये की जब कोई कीड़ा बदन से नीचे गिर जाता तो आप उसे उठा क़र वापस जिस्म पर रख लेते वगैरा।

ये बात तो कुतुब -ए- अक़ाइद में मिलती है कि अम्बिया -ए- किराम ऐसी बीमारी से पाक होते है जिनसे लोग नफरत करें या घिन करें क्योंकि अगर ऐसा हो तो फिर फ़रीज़ा -ए- तबलीग़ में रुकावट बनेगा और अम्बिया लोगों के दरमियान हिदायत ले कर आते हैं फिर अगर उनको ऐसा मर्ज़ हो तो लोग दूर होंगे और ये इस फ़रीज़ा -ए- तबलीग़ के माने होगा।

फतावा मरकज़ तरबियत -ए- इफ्ता में एक सवाल है की हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम को किस तरह का मर्ज़ हुआ था? और क्या जिस्म पर कीडे पडे थे या नहीं?

मौलाना मुहम्मद हबीबुल्लाह मिस्बाही लिखते है की आज़माईश से मुताल्लिक़ जो वाक़ियात मशहूर हैं उन्हें झुटलाया नहीं जा सकता जिस तरह हज़रते आदम

अलैहिस्सलाम की तौबा के मुताल्लिक़ वाक़ियात अलबत्ता अहादीस -ए- सहीहा में कीड़े पडने का ज़िक्र कहीं नहीं मिलता, बेशक़ अल्लाह त'आला ने हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम को आज़माईश में डाला फिर आपके मक़ाम -ए- रिफ'अत में बुलंदी अता फरमाई

(فتاوی مرکز تربیت افتا، ج2، ص393)

जब अहादीस -ए- सहीहा में कीड़े पडने का ज़िक्र नहीं तो ऐसी रिवायतो को बयान करना दुरुस्त नहीं है क्योंकि एक तरफ अक़ाईद में ये बात सराहत के साथ मज़कूर है की अम्बिया -ए- किराम ऐसी बीमारियों से पाक होते हैं जिनसे अवाम नफरत करती हो या जिनसे घिन करती हो।

अल्लामा बदरुद्दीन अयेनी हनफी रहिमहुल्लाहु त'आला लिखते हैं कि हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम ने जो फरमाया था की ऐ रब मुझे सख्त तकलीफ पहुंची है तो इस तकलीफ के बयान में हस्बे जेल अक़्वाल हैं :

(1) हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम को ये तकलीफ इसलिये पहुंची के लोगों ने कहा के इन्होने कोई बड़ा गुनाह किया होगा तभी इन्हें ये मर्ज़ हुआ है (माज अल्लाह)

(2) इन पर 40 दिनो तक वही (अल्लाह के तरफ से पैगाम) नहीं आया था जिसकी वजह से तकलीफ हुयी।

(3) ये आपने उस वक़्त दुआ की थी जब कीड़ो ने आपके पूरे जिस्म को खा लिया था और आपके दिल की तरफ चलने लगे थे।

इस पर अल्लामा गुलाम रसूल सईदी रहिमहुल्लाहु त'आला लिखते हैं की ये महज़ बातिल है,

अल्लाह के नबी ऐसी बीमारियो से पाक होते हैं जिनसे लोग नफरत करें और कीड़े पड़ जाना देखने वालो के लिये मूजिबे नफरत है।

अल्लाह के नबी पुर कशिश होते हैं के लोग उनकी तरफ रगबत करें ना के वो ऐसे हाल में हो के लोग उनसे दूर हो जायें और नफरत करें।

(4) ये दुआ आपने उस वक़्त की थी जब आपकी बीवी आपको छोड़ कर चली गयी थी और कोई आपकी देख भाल करने वाला ना था।

(5) हज़रते हसन बसरी ने बयान किया की इबलीसे लईन एक बकरी का बच्चा ले कर हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम की बीवी के पास आया और कहा :

तुम अपने शौहर से कहो के इस बकरी के बच्चे को मेरे नाम पर जबह कर दें फिर वो तंदूरस्त हो जायेंगे फिर वो ले कर गयी और बताया तो हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम ने फरमाया के तुम मुझे हलाक करने लगी थी!

जब अल्लाह ने मुझे शिफा दी तो मैं तुम्हें 100 कोड़े मारुंगा।

फिर आपने अपनी बीवी को घर से निकाल दिया और अकेले रह गये तब ये कहा की "मुझे सख्त तकलीफ पहुंची है" इनके अलावा और भी अक़्वाल हैं।

अगर ये ऐतराज़ किया जाये के जब हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम को इब्तेदा मे तकलीफ़ पहुंची तो उस वक़्त आपने दुआ क्यूं नहीं की?

इस का जवाब ये है की उन्हें इल्म था की ये तक़्दीर है और बंदा तक़्दीर में तसर्रुफ नहीं कर सकता और दुसरा जवाब ये है की इब्तेदा में इसलिये दुआ नहीं की ताकी बीमारी से आपको ज़्यादा सवाब मिले।

और इस आयत में ये है की तू रहम करने वालो से ज़्यादा रहम करने वाला है

ब जाहिर चाहिये था की वो अल्लाह से दुआ करते की मेरी इस तकलीफ़ को दूर फरमा पर आपने दुआ की के तू सब से ज़्यादा रहम करने वाला है गोया इस में आप अलैहिस्सलाम ने कहा के तू रहम करने वाला है और मेरे हाल पर रहम फरमा और मुझे इस मर्ज़ से शिफा अता फरमा।

हज़रते अय्यूब अ़लैहिस्सलाम की बीमारी के क़िस्से के मुतअ़ल्लिक़ इमाम इब्ने अबी हातिम, इमाम इब्ने जरीर, इमाम इब्ने हिब्बान और हाकिम ने अपनी अपनी सनदों के साथ हज़रते अ़नस रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु से ये रिवायत की है कि हज़रते अय्यूब अ़लैहिस्सलाम मर्ज़ में 13 साल मुब्तिला रहे और खालिद बिन दरीक ने कहा कि 80 साल की उम्र में आप के साथ ये मामला पेश आया था और हज़रते इब्ने अ़ब्बास ने फ़रमाया कि वो इस मुसीबत में 7 साल मुब्तिला रहे और उन पर ये मुसीबत 70 साल की उम्र में आयी थी।

हसन बसरी की तरफ मन्सूब है कि उन्होंने कहा कि हज़रते अय्यूब अ़लैहिस्सलाम को बनी इसराईल के कचरा घर में फेंक दिया गया था और वो 7 साल तक इस में पड़े रहे।

ये रिवायत सहीह नहीं है।

अल्लाह त'आला अपने नबियों को बा-वक़ार हालत में रखता है और उनको कूड़े करकट की जगह फेंक देना और सात साल तक उनका वहाँ पड़े रहना उनके वक़ार और उनकी अज़मत के मनफ़ी है।

अल्लाह त'आला अपने नबियों के मुतल्लिक़ फ़रमाता है :

اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰۤى اٰدَمَ وَ نُوْحًا وَّ اٰلَ اِبْرٰهِیْمَ وَ اٰلَ عِمْرٰنَ عَلَى الْعٰلَمِیْنَ ۙ (آل عمرن : 33)

"बेशक अल्लाह ने चुन लिया आदम और नूह और इब्राहीम की औलाद और इमरान की औलाद को (उनके ज़माने के) सारे जहान वालों पर"

अल्लाह त'आला इरशाद फ़रमाता है :

وَوَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوْحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ وَاَيُّوْبَ وَ
يُوْسُفَ وَمُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ
وَزَكَرِيَّا وَيَحْيٰى وَعِيْسٰى وَاِلْيَاسَ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ
وَاِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَيُوْنُسَ وَلُوْطًا ؕ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعٰلَمِيْنَ (الانعام: 84 تا 86)

"और हम ने इब्राहीम को इस्हाक़ और याक़ूब अता किये और हमने सब को हिदायत दी और इस से पहले हमने नूह को हिदायत दी और उन की अवलाद में से दाऊद और सूलैमान और अय्यूब और यूसुफ़ और मूसा और हारून को हिदायत दी और हम इसी तरह नेकी करने वालों को जज़ा देते हैं और ज़करिया और यह्या और ईसा और इल्यास (सब को हिदायत दी और) ये सब सालिहीन में से हैं और इस्माईल और अल-यसा और यूनुस और लूत (को हिदायत दी) और हम ने इन सब को तमाम जहान वालों पर फज़ीलत अ़ता फ़रमायी।

आले इमरान की आयात में अल्लाह त'आला ने इन के बारे में फ़रमाया कि हम ने इनको चुन लिया पसंद और मुंतखब कर लिया और जो अल्लाह त'आला का पसंदीदा और प्यारा हो उस के बारे में ये कैसे कहा जा सकता है कि वो सात साल तक कूड़े कचरे में पड़ा रहा?

सूरतुल अनाम की आयात में हज़रते अय्यूब अ़लैहिस्सलाम समेत दीगर अम्बिया के लिये फ़रमाया कि हम ने इन्हें तमाम जहान वालों पर फज़ीलत दी है तो क्या ये हो

सकता है कि जिसे अल्लाह त'आला ने जहान वालों पर फज़ीलत दी वो 7 साल तक कूड़े कचरे में पड़ा रहे?

(म'आज़ अल्लाह)

अल्लाह त'आला अंबिया अलैहिमुस्सलाम को पसंदीदा और मरगूब दिलकश शख्स बना कर दुनिया में भेजता है ताकि लोग उनकी तरफ रगबत करें और उनसे मानूस हों और जो अल्लाह का पैगाम सुनायें लोग उसे क़ुबूल करें और जो शख्स 7 साल तक कूड़े कचरे में पड़ा रहेगा तो लोग उसकी तरफ रगबत कर के उससे मुतास्सिर हो कर उस का पैग़ाम सुनेंगे या उससे मुतनफ्फर होंगे?

ये रिवायत अम्बिया-ए-किराम की अज़मत और उनके मंसब के बिल्कुल ख़िलाफ़ है और अल्लाह तआला अम्बिया को जिस हिकमत के लिये दुनिया में भेजता है, उस हिक्मत के मनाफ़ी है।

अल्लामा अइनी पार लाज़िम था कि इस रिवायत को अपनी शरह मे नक़्ल ना करते अगर कर दिया था तो इस का रद्द करते।

हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम पर कोइ सख़्त बीमारी मुसल्लत की गई थी पर वो बेमारी ऐसी नही थी कि जिससे लोग घिन खायें।

हदीसे सहीह मर्फ़ू में इस क़िस्म की किसी चीज़ का ज़िक्र नही है सिर्फ उनके माल मवेशी और औलाद के मर जाने का और बीमारी पर सब्र करने का ज़िक्र है।

उलमा और वायिजीन को चाहिये कि वो हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम की तरफ़ ऐसे अहवाल को मंसूब न करें जिनसे लोगो को घिन आये और दर्जे ज़ेल आयत को भी मल्हूजे ख़ातिर रखना चाहिये।

"और ये सब हमारे पसंदीदा और नेक लोग हैं"

(ص: 48)

अल्लामा गुलाम रसूल सईदी रहिमहुल्लाहू त'आला ने इस के इलावा जो हमने बुखारी की शाराह नेअमुल बारी से नक़ल किया, क़ुरआन की तफ्सीर तिब्यानूल क़ुरआन में भी इस पर तफ़सीली बहस की है, लिखते हैं :

उलमा-ए-तफ़सीर और उलमा-ए-तारीख़ ने ये बयान किया है की हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम बहुत मालदार शख्स थे, उन के पास हर क़िस्म का माल था, मवेशी और गुलाम थे और ज़रखेज और लहलहाते हुये खेत और बागात थे और हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम की औलाद भी बहुत थी फिर उनके पास से ये तमाम नेअमतें जाती रही और उनके दिल और जुबान के सिवा उनके जिस्म का कोई उज़्व सलामत ना रहा जिनसे वो अल्लाह त'आला का ज़िक्र करते रहते थे और वो इन तमाम मसाईब में साबिर थे और सवाब की निय्यत से सुबह और शाम और दिन और रात अल्लाह त'आला का ज़िक्र करते रहते थे।

उनके मर्ज़ ने बहुत तूल खींचा हत्ता के उनके दोस्त और अहबाब उनसे उकता गये, उनको शहर से निकाल दिया गया और कूड़े और कचरे की जगह डाल दिया गया, उनकी बीवी के सिवा उनकी देख भाल करने वाला कोई ना था, उनकी बीवी लोगों के घर में काम करती और उससे जो उजरत मिलती उससे अपनी और हज़रते अय्यूब की ज़रूरियात को पूरा करती।

वह्ब बिन मुनब्बे और दीग़र उलमा -ए- बनी इसराईल ने हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम की बीमारी और उनके माल और औलाद की हलाकत के मुतल्लिक़ बहुत तवील किस्सा बयान किया है।

मुजाहिद ने बयान किया है कि हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम वो पहले शख्स हैं जिन को चेचक हुयी थी, उनकी बीमारी की मुद्दत में कई अक़वाल हैं, वह्ब बिन मुनब्बे ने कहा वो तीन साल तक बीमारी में मुब्तिला रहे।

हज़रते अनस रदिअल्लाहु त'आला अन्हु ने कहा वो सात साल और कुछ माह बीमारी में मुब्तिला रहे, उनको बनी इसराईल के कचरे डालने की जगह पर डाल दिया गया था और उनके जिस्म में कीड़े पड़ गये थे हत्ता कि अल्लाह त'आला ने उन से बीमारी को दूर कर दिया और उन को सिह्हत और आफ़िय्यत अता फरमायी।

हमीद ने कहा वो 18 साल बीमारी में मुब्तिला रहे, उनके सारे जिस्म से गल कर गोश्त गिर गया था और जिस्म पर सिर्फ़ हड्डियाँ और कुछ गोश्त बाक़ी रह गया था। एक दिन उनकी बीवी ने कहा ए अय्यूब! आप की बीमारी बहुत तूल पकड़ गयी है, आप अल्लाह त'आला से दुआ करें कि वो आपको सिह्हत और आफ़िय्यत अता फ़रमाये।

हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मैं 70 साल सिह्हत और आफ़िय्यत के साथ रहा हूँ, हक़ तो ये है कि मै अब 70 साल सब्र करूँ।

(البدایہ والنھایہ، ج1، ص308، 309، مطبوعہ دارالفکر بیروت، 1418ھ)

जिस्म पर कीड़े पड़ने की तहक़ीक़ :

हाफ़िज़ अबुल क़ासिम अली बिन अल हसन इब्ने असाकिर (मुतवफ़्फ़ा 571 हिजरी) ने हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम की बीमारी का नक़्शा इस तरह खींचा है :

ज़ुबान और दिल के अलावा हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम के तमाम जिस्म पर कीड़े पड़ गये थे।

उनका दिल अल्लाह की मदद से ग़नी था और ज़ुबान पर अल्लाह का ज़िक्र जारी रहता था।

कीड़ों ने उनके तमाम जिस्म को खा लिया और जिस्म पर बस हड्डियाँ और रगें बाक़ी रह गयीं थी फिर कीड़ों के खाने के लिये भी कुछ बाक़ी ना रहा फिर कीड़े एक दूसरे को खाने लगे, दो कीड़े बाक़ी रह गये थे, उन्होंने भूक की शिद्दत में एक दूसरे पर हमला किया और एक कीड़ा दूसरे को खा गया फिर एक कीड़ा उनके दिल की तरफ बढ़ा ताकि उस में सूराख करे तब हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम ने ये दुआ की कि बेशक मुझे सख्त तखलीफ़ पहुँची है और तू सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है।

(مختصر تاریخ دمشق، ج5، ص107، مطبوعہ دارالفکر بیروت، 1404ھ)

हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम के जिस्म में कीड़े पड़ने का वाकिया हाफ़िज़ इब्ने असाकिर और हाफ़िज़ इब्ने कसीर दोनों ने बनी इसराईल के उलमा से नक़्ल किया है।

हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के जिस्म में कीड़े पड़ने का वाक़िया हाफ़िज़ इब्ने असाकीर और हाफ़िज़ इब्ने कसीर दोनो ने बनी इसराइल उलमा से नक़ल किया है और इनकी इत्तेबा में मुफस्सिरीन ने भी ज़िक्र किया है लेकीन हमारे नज़दीक ये वाक़िया सहीह नहीं क्यूँकी अल्लाह त'आला अम्बिया अलैहिमुस्सलाम को ऐसे हाल में मुब्तला नहीं करता जिससे लोगों को नफरत हो और वो उन से घिन खायें।

अल्लाह त'आला ने अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के मुताल्लिक़ फ़रमाया :

ये सब हमारे पसंदीदा और नेक लोग हैं

(ص:47)

हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम पर कोई सख्त बीमारी मुसल्लत की गयी थी लेकीन वो बीमारी ऐसी नहीं थी जिससे लोग घिन खायें।

हदीस सहीह मर्फू में भी इस क़िस्म की किसी चीज़ का ज़िक्र नहीं, सिर्फ़ उनकी अव्लाद और उनके माल मवेशी के मर जाने और उनके बीमार होने पर सब्र का ज़िक्र है ।

उलमा और वायिज़ीन को चाहिये की वो हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम की तरफ ऐसे अहवाल को मंसूब ना करें जिनसे लोगों को घिन आये अब हम इस सिलसिले में हदीसे सहीह मर्फू का ज़िक्र कर रहे हैं।

हज़रते अनस बिन मालिक रदिअल्लाहु त'आला अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : बेशक हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम अपनी बीमारी में 18 साल मुब्तिला रहे, उनके भाइयों में से दो शख्सों के सिवा सब लोगों ने उनको छोड़ दिया ख़्वाह वो रिश्तेदार हों या और लोग हों।

वो दोनों रोज़ सुबह व शाम उनके पास आते थे।

एक दिन एक ने दूसरे से कहा कि क्या तुम को मालूम है कि अय्यूब ने कोई ऐसा बहुत बड़ा गुनाह किया है जो दुनिया में किसी ने नहीं किया, दूसरे ने कहा क्योंकि 18 साल से अल्लाह त'आला ने इस पर रहम नहीं फरमाया हत्ता कि इससे इसकी बीमारी को दूर फरमा देता।

हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम ने कहा कि मै इस के सिवा और कुछ नहीं जानता कि दो आदमियों के पास से गुज़रा जो आपस में झगड़ रहे थे और अल्लाह त'आला का ज़िक्र कर रहे थे, मै अपने घर गया ताकि उनकी तरफ से कफ़्फ़ारा अदा करूँ क्योंकि मुझे ये नापसंद था कि हक़ बात के सिवा अल्लाह त'आला का नाम लिया जाये।

हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम अपनी ज़रूरिय्यात के लिये जाते थे और जब उनकी हाजत पूरी हो जाती थी तो उनकी बीवी उनका हाथ पकड़ कर ले आती। एक दिन उनको वापस आने में काफ़ी देर हो गयी। अल्लाह त'आला ने उन पर ये वही की :

(ज़मीन पर) अपनी एड़ी मारिये, ये नहाने का ठंडा और पीने का पानी है।

अल्लाह त'आला ने उनकी सारी बीमारी को उस पानी में नहाने से दूर कर दिया।

पानी में नहाने से बीमारी दूर हो गयी और आप पहले से बहुत सिह्हत मंद और हसीन हो गये उनकी बीवी उन्हें ढूंढती हुयी आयी और देख कर कहा ऐ शख्स! अल्लाह तुम्हें बरकत दे क्या तुमने अल्लाह के नबी को देखा है जो बीमार थे, अल्लाह की क़सम मैन तुमसे ज़्यादा उनके मुशाबे और तंदरुस्त शख़्स कोई नहीं देखा, हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम ने फरमाया मै ही हूँ।

हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम के दो खलियान थे, एक गंदुम का खलियान था और एक जौ का खलियान था।

अल्लाह त'आला ने दो बादल भेजे, एक बादल गंदुम के खलियान पर इस क़द्र बरसा के सोने से भर दिया और दूसरे बादल ने एक खलियान को चाँदी से भर दिया।

صحیح ابن حبان، رقم2898،

مسند البزار، رقم م2358،

حلیۃ الاولیاء، ج3، ص374،

مسند ابو یعلی، رقم3617،

المعجم الکبیر، رقم40،

المستدرک، ج2، ص582

इमाम हाकिम ने कहा ये हदीस सहीह है और इमाम ज़हबी ने भी मवाफ़िक़त की।

हाफ़िज़ हैसमी ने कहा कि इस हदीस को इमाम अबू याला ने और इमाम बज़्ज़ार ने रिवायत किया है और इमाम बज़्ज़ार की सनद सहीह है।

(مجمع الزوائد، ج8، ص208)

हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम के नुक़्सानात की तलाफ़ी :

क़ुरआने मजीद में है :

और हमने उसे उस का पूरा कुम्बा अता फ़रमाया बल्कि अपनी रहमत से इतना ही और भी इसके साथ और ये अक़्ल वालों के लिये नसीहत है।

(ص:43)

बाज़ कहते हैं कि पहला कुम्बा जो बतौरे आज़माइश हलाक कर दिया गया था उसे ज़िन्दा कर दिया गया और उसकी मिस्ल मज़ीद कुम्बा अता कर दिया गया और अल्लाह ने पहले से ज़्यादा माल और औलाद से उन्हें नवाज़ दिया जो पहले से दोगुना था।

इसे पढ़ कर मोमिन दिल क़रार पाता है और रब की रहमत पाने के लिये दुआ करने लगता है।

अल्लाह त'आला की तरफ़ आज़माइशों पर सब्र करने वालों को ऐसा ईनाम दिया जाता है कि जो उनके पास से गया, उस से भी बेहतर और ज़्यादा मिल जाता है।

ये फरमान पढ़ कर क्या आँखें ठंडी नहीं होती कि रब्बे करीम इरशाद फरमाता है "बल्कि अपनी रहमत से इतना ही और भी"

अल्लाह त'आला हमें हर हाल में उस का शुक्र अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम की ज़ौजा और क़सम :

हाफ़िज़ इब्ने असाकिर लिखते हैं कि हज़रते इब्ने अब्बास रदिअल्लाहु त'आला अन्हुमा बयान करते हैं कि इब्लीस ने रास्ते में एक ताबूत बिछाया और उस पर बैठ कर बीमारों का इलाज करने लगा।

हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम की बीवी वहाँ से गुज़री तो उस ने पूछा क्या तुम बीमारी में मुब्तिला उस शख्स का भी इलाज करोगे तो उस ने कहा कि हाँ इस शर्त के साथ कि जब मै उस को शिफ़ा दे दूँ तो तुम ये कहना कि तुम ने शिफ़ा दी है, इस के सिवा मै तुमसे कोई और अज्र तलब नहीं करता।

हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम की बीवी ने हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम से इस का ज़िक्र किया तो उन्होंने फ़रमाया कि तुम पर अफसोस है, ये तो शैतान था और अल्लाह के लिये मुझ पर ये नज़्र है कि अगर अल्लाह ने मुझे सिहत दे दी तो मै तुम्हें 100 कोड़े मारूँगा और जब वो तंदरुस्त हो गये तो अल्लाह ने फरमाया :

और अपने हाथ से (सौ) तिनकों का एक मुट्ठा (झाड़ू) पकड़ लें और उस से मारें और अपनी क़सम ना तोड़ें बेशक हमने इनको साबिर पाया, वो क्या ही खूब बंदे थे बहुत ज़्यादा रुजूअ करने वाले।

(ص:44)

फ़िर हज़रते अय्यूब अलैहस्सलाम ने अपनी बीवी पर झाड़ू मारकर अपनी क़सम पुरी कर ली।

(مختصر تاریخ دمشق،ج5،ص108)

हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम ने अपनी बीवी को सौ कोड़े की जगह जो ये झाड़ू से मार कर क़सम पूरी की तो फुक़हा का इस में इख़्तिलाफ़ है कि ये रिवायत सिर्फ हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम के साथ खास थी या कोई दूसरा शख्स भी सौ कोड़ों की जगह सौ तिनकों की झाड़ू मार कर क़सम तोड़ने से बच सकता है।

हदीस में है :

हज़रते साद बिन उबादा रदिअल्लाहु त'आला अन्हु बयान करते हैं कि हमारे घरों में एक शख्स रहता था जिस की ख़ल्क़त नाकिस थी।

वो अपने घर की एक बांदी से ज़िना करता था, ये किस्सा साद बिन उबादा ने रसूलुल्लाह ﷺ के सामने पेश किया तो आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि इसे 100 कोड़े मारो।

मुसलमानों ने कहा या रसूलल्लाह ﷺ! पर ये तो इस के मुक़ाबिले में बहुत कमज़ोर है, अगर हमने इस को 100 कोड़े मारे तो आप ने फ़रमाया कि इसके लिये 100 तिनकों की एक झाड़ू लो और वो झाड़ू इस को एक मरतबा मार दो।

(سنن ابن ماجہ، رقم2574،

المعجم الکبیر، رقم5521،

مسند احمد، ج5، ص222، رقم22281)

अल्लामा बूसेरी ने कहा कि इसकी सनद ज़ईफ़ है।

क़ुरआन और हदीस से ये मालूम होता है कि कमज़ोर और बीमार शख़्स पर क़सम पूरी करने के लिए या हद्द (इस्लामी सज़ा) जारी करने के लिए सौ कोड़े मारने के बजाए सौ तिनकों की झाड़ू मारी जा सकती है।

हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम की बीवी का नाम रहमत बिन्ते मन्शा बिन यूसुफ बिन याक़ूब बिन इस्हाक़ था।

(مختصر تاریخ دمشق، ج5، ص104)

हज़रते इब्ने अब्बास रदिअल्लाहु त'आला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह त'आला ने हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम को तंदुरुस्त करने के बाद उन का हुस्नो शबाब भी लौटा दिया था और उनके यहाँ इसके बाद 26 बेटे पैदा हुये।

हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम इसके बाद 70 साल तक मज़ीद ज़िंदा रहे, ताहम इसके खिलाफ मुअर्रिखीन का क़ौल है कि जब उनकी वफात हुई तो उनकी उम्र 93 साल थी।

(البدایہ والنہایہ، ج1، ص311)

इस में मुख्तलफ़ रिवायतें हैं कि हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम को इस भारी इब्तिला में मुब्तिला करने की क्या वजह थी।

बहर हाल सहीह बात ये है कि अल्लाह त'आला अपने नेक और मक़बूल बन्दों को मसाइब में मुब्तिला करता है।

हज़रते साद बिन अबी वक़ास रदिअल्लाहु त'आला अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि लोगों में सबसे ज़्यादा मसाइब में अम्बिया अलैहिमुस्सलाम मुब्तिला होते हैं फिर सालिहीन फिर जो उनके क़रीब हों।

इंसान अपनी दीनदारी के ऐतबार से मसाइब में मुब्तिला होता है। अगर वो अपने दीन में सख्त हो तो उस पर मसाइब भी सख्त आते हैं।

سنن ترمذی:2398،

مصنف ابن ابی شیبہ ج3، ص233،

مسند احمد، ج1، ص172،

سنن دارمی:2784،

سنن ابن ماجہ:4023،

مسند البزار:1150،

(مسند ابو یعلی:830

इस वाकिये के मुताल्लिक़ जो दलाइल हमने पेश किये उनसे ये बात समझ में आती है कि हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम का आज़माइश में डाला जाना और उनका बीमारी में मुब्तिला होना फिर उस पर सब्र करना और शुक्र बजा लाना ये बातें साबित शुदा हैं कि जिन का इंकार नहीं किया जा सकता पर इसकी तफ़सील में मुफ़स्सिरीन और मुअर्रिखीन ने जो रिवायतें नक़्ल की हैं उन सब को सहीह तस्लीम नहीं किया जा सकता क्योंकि उन में गैर मुनासिब बातें मौजूद हैं जिनकी अस्ल तहक़ीक़ के बाद वाज़ेह हो जाती है।

अल्लाह त'आला की रहमत हो उलमा -ए- अहले सुन्नत पर जिन्होंने इस वाकिये की तहक़ीक़ फरमायी और अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की शानो अज़मत के मुताबिक़ कलाम किया।

इस बारे में चाहिये कि ऐसी रिवायत से बचा जाये जिनसे अम्बिया की तरफ़ अदना सी भी तौहीन का शुब्हा हो और हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम के बारे में ये के कीड़े पड़ जाने और फिर उन्हें कूड़े कचरे में फेंक देना, ये क़तई मुनासिब नहीं कि इन्हें बयान किया जाये क्योंकि ये रिवायत सहीह नहीं और इस तरह की बातों का ज़िक्र सहीह अहादीस में नहीं मिलता।

मुफ़स्सिरीन और मुअर्रिखीन किसी एक उन्वान के तहत उस से मुताल्लिक़ा मवाद को ज़्यादा से ज़्यादा महफ़ूज़ करने के लिये बाज़ अवक़ात बहुत कुछ नक़्ल कर जाते हैं जिन में सहीह गलत सब शामिल हो जाता है तो बादे तहक़ीक़ जब मालूम हो तो लाज़िम है कि बजाये ऐसी रिवायत बयान करने या उनका दिफ़ा करने के उनसे दामन को बचाया जाये वरना नुक़्सान के अलावा कुछ हाथ आने वाला नहीं।

अल्लाह त'आला हमें हिदायत की राह पर क़ाइम रखे।

हम पनाह माँगते हैं शैतान के शर से।

अल्लाह हमें हक़ीक़त को देखने और समझने की तौफ़ीक़ दे।

अब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशियल

OUR OTHER PAMPHLETS

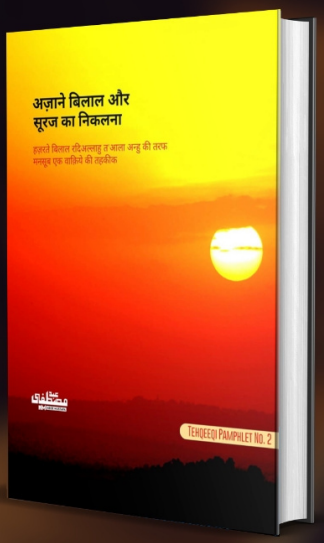

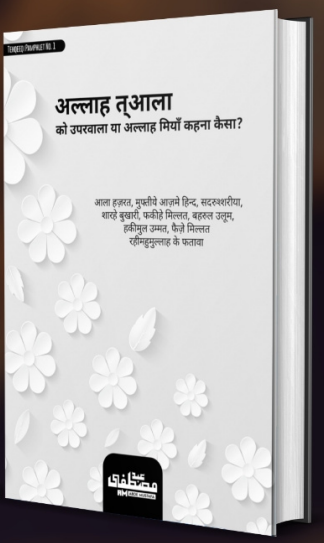

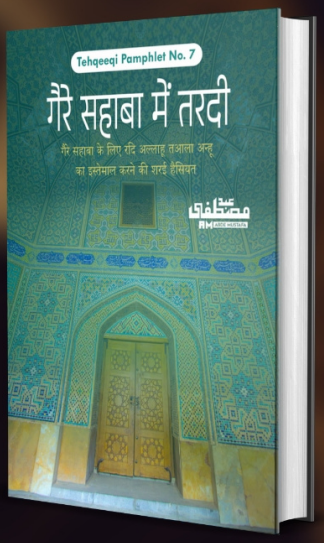

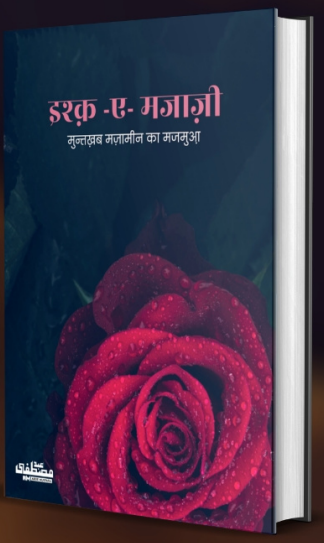

ABDE MUSTAFA OFFICIAL